शक्ति

DC-1

SEM-1

विषय - राजनीति विज्ञान

पेपर का नाम - राजनीति सिद्धांत का ज्ञान

अध्याय - शक्ति

पाठ्यक्रम निर्मात्री - डॉ० नमिता कुमारी

कॉलेज/विश्वविद्यालय : हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

civilexamonline.com

शक्ति

विषय सूची :

1. भूमिका
2. शक्ति क्या है ?
3. शक्ति के सिद्धांत का विश्लेषण
4. शक्ति एवं प्राधिकार
5. शक्ति : मत एवं सिद्धांत

   5 (1). डाल, बचराच एवं बराज

   5 (2). शक्ति पर लुकस के मत

   5 (3). शक्ति का मार्क्सवादी सिद्धांत

   5 (4). फूको

   5 (5). शक्ति का नारीवादी विचार

   5 (6). शक्ति के बारे में हाना आरेन्ट का मत
6. उपसंहार

civilexamonline.com

शक्ति

1. भूमिका

शक्ति का प्रयोग रोजमर्रा के जीवन में व्यापक रूप में होता है । स्वाभाविक एवं राजनीति, बातचीत में भी शक्ति की केन्द्रीय भूमिका रहती है। शीत युद्ध दो महाशक्तियों के बीच का संघर्ष था, भारत एक उभरती हुई शक्ति है, लोकतंत्र में शक्ति जनता के हाथों में होती है; यह सब कुछ ऐसे वक्तव्य हैं, जो रोजाना की राजनीतिक बातचीत में प्रयोग होते रहते हैं। परन्तु जब हम इन वक्तव्यों की गहराई में उतरते हैं तो शक्ति के बारे में भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। एक तो भाषा में इस शब्द का उपयोग इतने व्यापक स्तर पर होता है कि इसका अर्थ निश्चित कर पाना कठिन हो जाता है । दूसरी ओर शक्ति राजनीतिक सिद्धांत में केन्द्रीय भूमिका में है । इसलिए राजनीति सिद्धांत को समझने के लिए शक्ति के सिद्धांत को समझना महत्वपूर्ण है । कभी-कभी तो राजनीति की परिभाषा भी शक्ति के माध्यम से दी जाति है । शक्ति की परिकल्पना, राजनीति शास्त्र के अन्य केन्द्रीय राजनीतिक सिद्धांतों को समझने के लिए भी आवश्यक है। राजनीतिक सिद्धांत के विषय के अंतर्गत, शक्ति की अवधारणा अन्य केन्द्रीय अवधारणाओं से जुडी भी हुई है। वेबर ने राज्य को परिभाषित करते हुए कहा कि राज्य के पास बल का एकाधिकार होता है। यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि किस प्रकार से यह बल वैध हो पाता है। जब हम राजनीतिक सिद्धांत में स्वतंत्रता की अवधारणा पर बात करते हैं, तो वह विमर्श मुख्य रूप से इस प्रश्न के आसपास होता है कि राज्य को जनता के जीवन में हस्तक्षेप करने का कितना अधिकार हो , और जनता के पास राज्य का प्रतिरोध करने की कितनी शक्ति है । न्याय एवं समानता का विचार भी शक्ति के असमान बटवारे को लेकर ही विमर्श करता है । लोकतंत्र की अवधारणा भी शक्ति को जनता को देनी की बात पर आधारित है। एलस्टर नाम के विद्वान का मत है कि, शक्ति के सिद्धांत का राजनीति में वैसा ही महत्त्व है, जैसा कि उपयोगिता के सिद्धांत का अर्थशास्त्र में। ऊपर किये गए चर्चा से यह पता चलता है कि शक्ति का सिद्धांत राजनीतिशास्त्र के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में एक है।

civilexamonline.com

साधारणतः **शक्ति** वह सामर्थ्य या सामर्थ्यों का समूह है , जिसके द्वारा एक कर्ता दूसरे कर्ता अथवा घटनाक्रम को प्रभावित करके अपने लक्ष्यों या हितों की प्राप्ति करता है।

शक्ति

शक्ति शब्द के व्यापक उपयोग को देखते हुए यह प्रश्न उठता है कि , शक्ति के सिद्धांत का अध्ययन किस प्रकार से किया जाये। साधारण जीवन में शक्ति, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक इत्यादि सन्दर्भों में होती है । परन्तु यहाँ हमारा बल राजनीतिक एवं सामाजिक सन्दर्भों पर है। राजनीतिक सिद्धांतों के अंतर्गत भी शक्ति के बारे में मतैक्य नहीं है।

शक्ति के विभिन्न विचारक, वेबर, डाल, फूको, आरेन्ट इत्यादि एक दुसरे के विचारों से सहमत नहीं दिखते । इस असहमति का एक प्रमुख कारण शक्ति के उपयोग से संबद्ध है। अगर हम वितगेंस्टीन के शब्दों में कहें तो शक्ति एक 'पारिवारिक समरूप' सिद्धांत (family resemblance concept) है। ऐसे सिद्धांतों का कोई एक मूलतत्व नहीं होता, अपितु वे भिन्न सिद्धांतों के मिले जुले प्रतिफल होते हैं। इसलिए शक्ति का अध्ययन करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि शक्ति , भिन्न-भिन्न प्रकार के सामाजिक घटनाक्रमों की ओर इंगित करती है, और उन में से प्रत्येक किसी खास सन्दर्भ में विमर्ष कर रहा होता है। प्रसिद्ध विद्वान लुकस का कहना है कि शक्ति की विवेचना, किसी खास हित को ध्यान में रखकर की जाती है । ऐलन बॉल ने भी शक्ति की अवधारणा को 'अनोखे रूप से जटिल अवधारणा' करार दिया है। माइकेल ऑकसाट का मानना है कि शक्ति शब्द, राजनीतिक शब्दों में सबसे अधिक दुरूपयोग में आता है।

civilexamonline.com

मूल रूप से शक्ति की अवधारणा की समस्या का कारण उसकी परिभाषा, कार्य, गुण, प्रक्रिया, इत्यादि के बारे में विद्यमान असहमति है। समाज विज्ञानं के विश्वकोष में शक्ति की अवधारणा से सम्बंधित पाँच प्रकार के मुख्य विवादों को बताया गया है-

1. शक्ति का स्रोत क्या है? क्या यह वैयक्तिक क्रियाकलापों पर निर्भर है, या फिर यह वृहत सामाजिक संरचना की उपज है?
2. क्या शक्ति संसाधन या क्षमता है जो सुप्त रहती है और सिर्फ प्रयोग के समय ही अस्तित्व में आती है।
3. क्या शक्ति कुछ निश्चित इक्षित लक्ष्यों को पाने का सामर्थ्य है या फिर यह शक्ति का उपयोग करने वाले तथा जिस पर शक्ति का उपयोग हो रहा है उनके अंतर्संबंध को इंगित करता है?

4. क्या शक्ति हमेशा ही प्रभुत्व, निग्रह एवं निरोध के साथ होती है या फिर वह सम्मति पर भी आधारित हो सकता है?
5. क्या हम सिर्फ वैसे घटनाक्रमों को शक्ति के उदाहरण के रूप में देख सकते हैं जहाँ पर सिर्फ दिखाई देने वाले परिणामों पर ही नजर होती है या फिर वैसे परिणामों पर भी ध्यान देना चाहिए जो गौण हैं?

जब हम शक्ति पर विवेचना करेंगे तो पायेंगे की भिन्न-भिन्न विद्वानों के मतों में ऊपर दिए गए विवादों की झलक मिलती है।

2. शक्ति क्या है ?

'शक्ति' शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द POWER का हिंदी अनुवाद है। 'पॉवर' शब्द की उपज लैटिन शब्द पोटेरे (Potere) से होती है, जिसका अर्थ है क्षमता । ज्यादातर शब्दकोषों में शक्ति की परिभाषा उस सामर्थ्य या क्षमता से दी जाती है, जो दूसरे को प्रभावित कर सके। इसलिए हम शक्ति की एक साधारण परिभाषा यह दे सकते हैं कि शक्ति वह सामर्थ्य या सामर्थ्यों का समूह है जिसके द्वारा एक कर्ता दूसरे व्यक्ति या घटनाक्रम को प्रभावित करके अपने हितों या लक्ष्यों की प्राप्ति करता है। हम कुछ विद्वानों द्वारा शक्ति की दी गई परिभाषाओं पर दृष्टि डालेंगे।

civilexamonline.com

राबर्ट डाल - क के पास ख के ऊपर उस हद तक शक्ति है यहां तक वह ख को ऐसा करने पर मजबूर करे जैसा ख ने अपने आप नहीं किया होता।

फूको का कहना है कि शक्ति एक चीज ही बल्कि एक संबंध है । यह सिर्फ दमनकारीनहीं बल्कि उत्पादक, निर्णायक और फलप्रद भी है। शक्ति पूरे सामाजिक व्यवस्था में फैली हुई है।

लुकस का कहना है कि कर्ता क शक्ति का प्रयोग तब करता है जब वह ख को अपने हित से अलग काम करने के लिये बाध्य करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं की शक्ति की भिन्न परिभाषायें हैं, परन्तु हम इनमे से कुछ बातों को चिह्नित कर सकते हैं जो शक्ति के सिद्धांत का गुण बताते हैं।

(क) शक्ति का सिद्धांत संबंधपरक है। इसका अर्थ यह हुआ कि शक्ति का उपयोग हमेशा एक संबंध में होता है । जहाँ शक्ति का उपयोग हो रहा है , वहाँ अवश्य ही कोई होगा जिसपर शक्ति का प्रयोग हो रहा है ।

(ख) शक्ति हमेशा ही किसी परिस्थिति में ज्यादा या कम होती है।

(ग) शक्ति द्विपक्षीय होती है। एक कर्ता जो शक्ति का उपयोग करता है उसे उनके हितों और मांगों का भी ध्यान रखना होता है, जिस पर शक्ति का उपयोग हो रहा है। लॉसवेल एवं कापलान का मानना है कि जिनके क्रियाकलापों पर शक्ति के प्रयोग का असर होता है वे भी निर्णय प्रक्रिया में हिस्सेदार हैं- क्योंकि उनकी सहमती या असहमति यह निर्धारित करता है कि कोई निर्णय है या नहीं है।

(घ) शक्ति क्रियाशील एवं विशिष्ट होती है । इसका अर्थ है कि शक्ति काल देश के अनुसार बदल सकती है।

civilexamonline.com

3. शक्ति के सिद्धांत का विश्लेषण

शक्ति का प्रयोग अभिलाषा या इच्चा पर निर्भर है। जो शक्ति का प्रयोग करते हैं, वो इसका प्रयोग करने का चुनाव करते हैं तो शक्ति का प्रयोग होता है। उसी प्रकार से जिन पर शक्ति का प्रयोग हो रहा होता है, वह उनकी इच्छा एवं हित के विपरीत होना चाहिए। शक्ति अप्रकट एवं प्रकट दोनों प्रकार से देखा जाता है । जिस कर्ता के पास अप्रकट एवं प्रकट कोई भी शक्ति होती है वह दूसरे कर्ता के व्यवहार में बदलाव लाने में सक्षम हो सकता है। शक्ति बहुत सारे रूपों में प्रकट होती है, अतः शक्ति को उसके किसी एक रूप के साथ उलझाकर देखना उचित नहीं है। रॉलेन ग्रिग्रस्बी ने अपनी पुस्तक में शक्ति के चार रूपों की बात की है। उनके अनुसार राजनीतिक संबंध के क्षेत्र में ये रूप कभी भी अपने शुद्ध संस्करण में नहीं मिलते । ये हमेशा मिले-जुले ही दीखते हैं। ये चार रूप हैं :

शक्ति

Force- बल

Persuasion – अनुनय

Manipulation – छलयोजना

Exchange - विनिमय

बल : शक्ति का उपयोग, भौतिक साधनों द्वारा होता है तब वह बल कहलाता है। यहाँ वह कर्ता जो शक्ति का प्रयोग करता है दूसरे कर्ता या कर्ताओं के लिए शारीरिक बाधाएं उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए : शारीरिक हिंसा, दंगा -फसाद, आतंकवादी गतिविधियाँ, बहिष्कार, घेराव, बंद बलात्कार, परिवहन रोकना इत्यादि । मूल रूप से जिन पर शक्ति का प्रयोग हो रहा है, उनकी स्वतंत्रता को रोकना है। बल प्रयोग काफी मात्र में देखने को मिलता है । वहीँ गाँधी और मार्टिन लूथर किंग जैसे नेताओं ने अहिंसक प्रयोग के सफल उदाहरण भी प्रस्तुत किए हैं।

civilexamonline.com

अनुनय : अनुनय गैर-शारीरिक शक्ति है। यहाँ पर जो कर्ता शक्ति का प्रयोग कर रहा है , वह अपने हितों एवं उद्देश्यों को साफ़-साफ़ उसको बताता है, जिस पर शक्ति प्रयोग होता है। यहाँ पर जो कर्ता शक्ति का प्रयोग कर रहा है , कर्ता (जिस पर शक्ति का उपयोग हो रहा है) के साथ किसी बात में सही या गलत होने पर विवाद करता है ? एवं कर्ता को वैसा करने के लिए राजी करता है, जैसा उसने खुद से नहीं किया होता। अनुनय हमेशा गैर-हिंसक होता है। लोकतान्त्रिक राजनीति मे अनुनय वृहद रूप से उपयोग मे लाया जाता है। समर्थन-जुटाव (lobbying), तर्क-वितर्क, भाषा देना, पत्र लिखना, समर्थन-पत्र, जैसी प्रक्रियाओं में अनुनय को देख सकते हैं।

छलयोजना: यह अनुनय की तरह है और गैर-शारीरिक एवं अहिंसक होता है। परंतु अनुनय से अलग, यहाँ पर शक्ति का प्रयोग करने वाला कर्ता अपने हितों एवं उद्देश्यों को उजागर नहीं करता। इसलिए जिन कर्ताओं पर शक्ति का प्रयोग होता है, वे इसके प्रयोग से अनभिज्ञ रहते हैं। ऐसे में छल योजना का विरोध करना नामुमकिन प्रतीत होता है, क्योंकि कोई किसी ऐसी प्रक्रिया का विरोध कैसे कर सकता है जिसके बारे मे उसे पता ही नहीं है। छल योजना का प्रयोग राजनीति में विद्यमान है परंतु इसके प्रयोग को सिद्ध करना कठिन है।

विनिमय: इस प्रकार के शक्ति-प्रयोग में प्रलोभन का उपयोग होता है। इसमें एक कर्ता किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किसी दूसरे कर्ता को कुछ देता है। यहाँ पर शक्ति का प्रयोग कर रहा करता दूसरे कर्ता से कुछ ऐसा करवाता है जो दूसरे कर्ता ने खुद नही किया होता। परंतु दूसरा कर्ता ऐसा अपनी इच्छा से तब करता है जब पहला कर्ता उसे इस कार्य को करने के लिए कुछ देता है। यहाँ पर शक्ति प्रयोग इसलिए हुआ की दूसरा कर्ता की ईच्छा के अनुसार कार्य करने पर प्रलोभन के कारण विवश होता है। ऐसी स्थिति में शक्ति प्रयोग को समझना कठिन होता है।

4. शक्ति एवं प्राधिकार:

शक्ति एवं प्राधिकार दो ऐसे शब्द एवं अवधारणाएँ हैं जो कि अदल-बदल कर उपयोग होते हैं तथा इन दोनों के अंतर को लेकर भ्रम विद्यमान है। कभी-कभी तो इसके अदल-बदल उपयोग से ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों का अर्थ एक ही है। इस भ्रम कि स्थिति का कारण है कि, दोनों के बीच अंतर होने के बावजूद भी दोनों में कभी न टूटने वाली कड़ी है। हम लोगों ने यह देखा है कि शक्ति, प्रभावित करने की क्षमता को कहते हैं। प्रभाव, प्राधिकार में भी है परंतु यहाँ हम प्रभावित करने के अधिकार के बारे में पूछते हैं। जो लोग दूसरों को प्रभावित कर रहे हैं, क्या उनको ऐसा करने का अधिकार है। यही अधिकार, प्राधिकार को परिभाषित करता है। यह अधिकार भिन्न प्रकार के स्रोतों से प्राप्त हो सकता है। अगर हम एक लोकतान्त्रिक पद्धति के राजनीतिक प्राधिकार कि बात करें, तो वह जनता कि इच्छा एवं संविधान से मिलता है। वहीं एक धर्म-राज्य में राजनीतिक प्राधिकार धर्म ग्रन्थों (जैसे कुरान, बाइबल) से मिलता है। यह स्रोत, प्राधिकार को वैधता प्रदान करते हैं। वैधता का अर्थ है , राजनीतिक शक्ति का किसी भी समूह में ऐसा उपयोग, जो उस समूह के लोगों द्वारा स्वेच्छा से स्वीकार किया जाता है।

civilexamonline.com

प्राधिकार शक्ति का वह प्रयोग है जिसे वैध माना जाता है। वैधता शक्ति के प्रयोग करने वाले के पास भिन्न-भिन्न स्रोतों से आ सकती है। अर्थात जो शक्ति का प्रयोग कर रहा है, वह उस प्रयोग के लिए उचित पात्र है।

कभी-कभी ऐसा देखने में आता है कि एक समूह राजनीतिक शक्ति को हिंसक माध्यम से प्राप्त कर लेता है, परंतु वह फिर अपनी वैधता का निर्माण करने के लिए भिन्न प्रकार के स्रोतों

का सहारा लेता है। ऐसे में अगर जनता नए शासकों के प्राधिकार को स्वीकार नहीं करती तो या तो नए शासक शक्ति को छोड़ देते हैं , या फिर वे विरोधियों का दमन करते हैं। प्राधिकार के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की जिनपर शक्ति का उपयोग हो रहा है, वे शक्ति के उपयोग एवं उपयोग करने वाले को सही मानते हैं।

महान जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने यह समझाने का प्रयास किया है कि क्या जनता शक्ति के प्रयोग को सही स्वीकार करती है। वेबर ने तीन प्रकार के प्राधिकारों की चर्चा की है, जहां तीनों भिन्न-भिन्न स्रोतों से उपजते हैं। वेबर का मानना था कि प्राधिकार साधारणतः लोगों का शक्ति के सही होने में विश्वास है। इसलिए यह बात महत्वपूर्ण नहीं है की वह अधिकार कहाँ से आता है। वेबर के अनुसार प्राधिकार , वैध शक्ति को ही कहते हैं।

<u>परंपरागत प्राधिकार-</u> परंपरागत प्राधिकार की वैधता , ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और प्रथागत नियमों और कायदों पर निर्भर होती है। सैद्धांतिक आधार पर ऐसा प्राधिकार बहुत लंबे समय से चला आ रहा है । और पीढ़ी दर पीढ़ी ने इस प्राधिकार को स्वीकार किया होता है। परंपरागत प्राधिकार के उदाहरण धार्मिक समुदायों एवं जनजातीय समाजों मे देखने को मिलता है।

civilexamonline.com

<u>चमत्कारी प्राधिकार-</u> इस प्रकार का प्राधिकार वैयक्तिक गुणों से आता है। कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनमे दूसरों को आकर्षित करने एवं बांधने की असाधारण क्षमता होती है। ऐसे व्यक्तिक गुणों के कारण दूसरे उनकी आज्ञा पालन करते हैं। हालांकि चमत्कारी प्राधिकार सिर्फ नैसर्गिक प्रकृति का नहीं है। अधिकतर समय राजनीतिक नेता करिश्मा को गढ़ने का भी प्रयास करते हैं। अपना करिश्मा स्थापित करने के लिए वे मीडिया द्वारा अपनी छवि निखारने का प्रयास करते हैं। साथ ही साथ अपनी 'कल्ट ऑफ पर्सनालिटी' बनाने का प्रयास करे हैं। चमत्कारी प्राधिकार के कुछ मुख्य उदाहरण हैं: मुहम्मद साहब, हिटलर, मुसोलिनी, गांधी, नासिर आदि।

<u>तर्कसंगत-कानूनी प्राधिकार-</u> इस प्रकार का प्राधिकार आधुनिक औधोगिक-नौकरशाही समाज का एक विशेष गुण है। ऐसे समाज में कुछ निश्चित नियमों के समूह होते हैं जो संगठन एवं पदों का निर्माण करते हैं और फिर प्राधिकार उन्ही पदों से व्युत्पन्न होता है। यहाँ पर लोग

शक्ति

आज्ञापालन व्यक्ति का नहीं वरण अव्यक्तिगत विधि-शासन का करते हैं। आधुनिक समाज के ज़्यादातर राजनीतिक प्राधिकार इस प्रकार के प्राधिकार के उदाहरण हैं।

मैक्स वेबर(1864-1920) एक जर्मन समाजशास्त्री तथा दार्शनिक थे। दखाइम एवं मार्क्स के साथ वेबर को सामाजशास्त्र के विषयों के निर्माता के रूप मेन देखा जाता है। राजनीतिक अर्थशास्त्री के रूप में वेबर द्वारा प्रोटेस्टेंटवादी आचार नीति को पूंजीवाद के उदय के लिए जिम्मेदार ठहराना एक महत्वपूर्ण विचार था। वेबर अपने नौकरशाही से संबन्धित विचारों के लिए भी जाने जाते हैं। वेबर का प्रभाव भिन्न-भिन्न विषयाओं पर देखने को मिलता है। वेबर की मुख्य रचनाएँ हैं- " प्रोटेस्टेंट वादी आचारनीति एवं पूंजीवादी विचारधारा ", "सामाजिक विज्ञान की क्रियाविधि ", सामान्य आर्थिक इतिहास: प्राचीन सभ्यता के क्षय के सामाजिक कारण"।

Source: http://en.wikipedia.org/wiki/File:Max_Weber_1894.jpg

civilexamonline.com

वेबर द्वारा बताए गए प्राधिकार के तीन आदर्श प्रकार हैं। निवेदिता मेनन के अनुसार ये आदर्श प्रकार सिर्फ सैद्धांतिक यंत्र है, जो सामाजिक विश्लेषण मे सहायता करते हैं। ये प्रकार आनुभविक सत्यता की व्याख्या नहीं करते । इसिलिए साधारणतः अनुभव मे आने वाले प्राधिकार पूर्ण रूप से किसी एक प्रकार का नहीं होता (मेनन, 2008) ।

शक्ति

5. शक्ति: मत एवं सिद्धांत

ग्रीक इतिहासकार , थ्यूसिडाइडस ने पाँचवीं शताब्दी ईसापूर्व मे एथेंस एवं स्पार्टा के बीच हुए युद्ध पर अपनी पुस्तक 'पेलोपनेसियन युद्ध का इतिहास ' में चर्चा की है। इस पुस्तक में शक्ति के महत्व एवं उपयोग पर विस्तृत चर्चा है। पुराने समय से शक्ति के बारे में भिन्न प्रकार के प्रश्नों पर चर्चा होती रही है। एक महत्व पूर्ण प्रश्न यह रहा है कि मनुष्य शक्ति कि इच्छा क्यों करता है? इसके उत्तर में दो प्रकार के मत पाए जाते हैं- प्रथम, मनुष्य का स्वाभाव ही उसे शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है , दूसरा, मनुष्य अपने परिस्थितियों के कारण शक्ति प्राप्ति करने के लिए प्रेरित होता है।

हाल की शताब्दियों में शक्ति पर विचार ने नया मोड़ लिया है। अब शक्ति कि इच्छा को एक वास्तविकता मानते हुए, शक्ति के प्रकार, कार्य, माध्यम, इत्यादि पर विचार होने लगा है , राजनीति सिद्धांत में शक्ति पर विचार अन्य सिद्धांतों के साथ मिला-जुला रहता है , जैसे वैधता, प्राधिकार, न्याय, नागरिकता, इत्यादि। महान दर्शनशास्त्री अरस्तु ने शक्ति के बँटवारे के आचार पर उस समय विद्‌यमान शासन पद्धतियों का वर्गीकरण करने का प्रयास किया। आधुनिक समय में शक्ति पर विचार करने वाले विधानों में हॉब्स एवं मेक्यावेली अग्रदूत हैं। अपनी पुस्तक 'द प्रिंस' में मेक्यावेली ने शक्ति एवं संस्था के बारे में एक सामरिक एवं वि केंद्रीकृत विचार प्रस्तुत करते हैं। दूसरी तरफ हॉब्स अपनी पुस्तक 'लेवियाथन' में शक्ति का केंद्रीकृत विचार प्रस्तुत करते हैं। हॉब्स अपनी विचार में शक्ति, संप्रभु के हाथों में केन्द्रित होती है। इसिलिए वे शक्ति को आधिपत्य के रूप में देखते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में कार्ल मार्क्स एवं एंगेल्स ने शक्ति का वर्ग विचार प्रस्तुत किया। वे शक्ति को शोषण के रूप में देखते हैं। शक्ति पर उनके विचार संस्थागत थे, और उन्होने शक्ति के संभाव्यता सिद्धांत को माना। इसका अर्थ होता है कि किसी सामाजिक संबंध में एक कर्ता का दूसरों के विरोध के बावजूद अपने इच्छा से कार्य करने कि कितनी संभावना है। ऊपर हमने देखा है कि वेबर ने तीन प्रकार के प्राधिकारों के बीच अंतर स्पष्ट किया है। वेबर के बाद शक्ति पर विचार करने वाले विचारकों ने शक्ति पर सिर्फ अपने विचार रखने के बजाये, शक्ति का व्यवस्थित सिद्धान्त प्रतिपादित करने का प्रयास किया है । कुछ जाने-माने शक्ति के राजनीतिक

civilexamonline.com

शक्ति

एवं सामाजिक विचारक हैं- राबर्ट डाल, पिटर बैकरेक, मार्टर्न वराज , स्टीवन लुकस , निकोस पाओलनजास, हाना आरेंट, ऐंथेनी गिडेन्स, मेसेल फूको एवं हैगार्ड। शक्ति के बारे में भिन्न प्रकार के मतों को इन विचारधारात्मक स्तरों पर वर्गीकृत कर सकते हैं- शक्ति का अभिजाती वर्ग दृष्टिकोण (बर्नहम , मिल्स) , शक्ति का बहुलवादई दृष्टिकोण (डाल) , शक्ति का नव-बहुलवाड़ी दृष्टिकोण (लिंडबोम) , शक्ति का मार्क्सवादी दृस्टी कोण (मार्क्स, ग्राम्सी, अल्थुसर, लुकका)शक्ति का नारीवादी दृष्टिकोण(आकीन,मिचेल) ।

अन्य दृष्टिकोण के अंतर्गत (नीत्से, फूको , आरेंट) शक्ति के विचारकों को एक अन्य प्रकार से भी वर्गीकृत कर सकते हैं , ज़्यादातर विचारक शक्ति को संघर्ष के संदर्भ में देखते हैं , वहीं कुछ विचारक शक्ति को सहमति के संदर्भ में भी देखते हैं। जो शक्ति को संघर्ष के संदर्भ में देखते हैं, वो शक्ति को वर्चस्व की तरह परिभाषित करते हैं। इस प्रकार के विचारक हैं- हॉब्स , वेबर, मार्क्स, एवं अन्य बहुलतावादी, यथार्थवादी विचारक।

दूसरे प्रकार का मत शक्ति को वर्चस्व से नहीं परिभाषित करता है और इसका मानना है कि शक्ति सहमति पर आधारित होती है। इस प्रकार के मत को मानने वाले मुख्य विचारक हैं- हाना आरेण्ट, बेरी बारनेस एवं पारसन्स। हालांकि कुछ विचारक ऐसे भी हैं जो शक्ति को संघर्ष एवं सहमति दोनों संदर्भ में देखते हैं , जैसे- गिडेन्स, वलेग एवं हैगार्ड। अब हम शक्ति पर कुछ विचारकों एवं विचारधाराओं के मत तथा सिद्धांतों का अध्ययन करेंगे-

civilexamonline.com

5 (i) डाल, बचराच एवं बराज

राबर्ट डाल ने अपनी पुस्तक (द कांसेप्ट आफ पावर) में शक्ति के बारे में विस्तृत विवेचन किया है। डाल की शक्ति के विवेचन का संदर्भ उन आलोचकों को जवाब देना है जिन्होंने अमेरिकी लोकतन्त्र कि आलोचना की है। सामुदायिक शक्ति के सिद्धांतकारों (सी. राइट मिल्स आदि) ने अमेरिकी लोकतन्त्र की आलोचना की थी। डाल की शक्ति की परिभाषा वेबर से प्रभावित प्रतीत होती है। परंतु जहां वेबर संस्थागत संरचना के संदर्भ में बात कर रहे थे वहीं डाल लोकतान्त्रिक समुदाय के संदर्भ में बात कर रहे थे । डाल शक्ति की परिभाषा देते हुए कहते हैं-

शक्ति

‘क के पास, ख के ऊपर उस हद तक शक्ति है जहा तक वह ख को ऐसा करने पर मजबूर करे जैसा ख ने अपने आप नही किया होता’। डाल को यह परिभाषा किसी को कुछ करने पर मजबूर करने एवं किसी को कुछ करने से रोक देने; दोनों ही संदर्भ में लागू होती है। शक्ति को समझने का यह तरीका दृश्य निर्णय व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित करता है। इसलिए इसे निर्णय प्रक्रिया व्यवहार सिद्धांत भी कहते हैं। हगार्ड (Power: A Reader) का कहना है कि डाल का शक्ति संबंधी मत निर्णय प्रक्रिया में विजय से है। अभिजात्य वर्गीय सिद्धांतकार , मिल्स ने कहा की अमेरिकी लोकतन्त्र में शक्तिशाली अभिजात्य वर्गों के बीच अंतरसंबंध है। इस कारण से शक्ति कुछ अभिजात्य वर्ग के हाथों में केन्द्रित है।

डाल ने इस प्रकार के विचार की आलोचना की है। डाल ने न्यू हेवेन , कनेक्टीकट, अमेरिका में समुदाय के स्तर पर शक्ति सम्बन्धों का विश्लेषण किया। इस विश्लेषण के आधार पर उन्होने यह दिखाया कि समुदाय में शक्ति व्यापक रूप से बंटी हुई है। इसका अर्थ है की शक्ति समुदाय के भिन्न-भिन्न समूहों के बीच बंटी हुई है , और किसी अभिजात्य वर्ग के एकाधिकार में नहीं है। डाल के अनुसार अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था में बहुत सारे हित समूह है, जो एक खुले और समावेशी वातावरण में एक दूसरे से प्रतिद्वंद्विता करते हैं। समूहों के बीच के इस प्रतिद्वंद्वी व्यवस्था को डाल पोलियार्की (polyarchy)का नाम देते हैं। डाल लोकतन्त्र की जगह पालिआर्की (बहुतों द्वारा शासन) शब्द का उपयोग करते हैं। डाल के अनुसार लोकतंत्र एक आदर्श व्यवस्था है, और बहुत प्रकार के संरचनागत व्यवस्था ऐं इस आदर्श के प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। बहुसूत्रशासन (Polyarchy) प्रत्यक्ष लोकतन्त्र नहीं है , और यह प्रतिनिधित्व के सिधधानत पर आधारित है।

civilexamonline.com

आभिजात्य वर्ग सिद्धांत (Elite Theory) समाज में विदमान शक्ति सम्बन्धों की व्याख्या करने का प्रयास करता है। इस सिद्धांत का कहना है की आर्थिक , सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से प्रभावशाली लोगों के एक छोटे समूह के पास ही समाज की सारी शक्ति केन्द्रित होती है। इस सिद्धांत के कुछ महत्वपूर्ण विचारक हैं- विलफ्रेड परेटों, गेतनाओ मोस्का , राबर्ट मिचेल्स , सी. राईट मिल्स, जेम्स बर्नहाम एवं राबर्ट पटनम।

शक्ति

डाल का नज़रिया सिर्फ प्रत्यक्ष निर्णय प्रक्रिया को देखता है एवं शक्ति के छुपे हुए चेहरे को देखने मे असक्षम है। इसिलिए इसे स्टीवन लुकास , शक्ति का एक आयामी दृश्य करार देते हैं। पीटर बेकरेक एवं मार्टर्न बराज नाम के विद्वान , डाल के एक आयामी दृश्य के प्रतिकृया मे शक्ति के बारे में अपना मत रखते हैं। उनका कहना है की सिर्फ यह देखना महत्वपूर्ण नहीं है की निर्णय कैसे हो रहा है (शक्ति का प्रत्यक्ष रूप) पर यह भी जानना महत्वपूर्ण है की निर्णय प्रक्रिया में कैसे बाधा उतपन्न होती है (शक्ति का प्रत्यक्ष रूप)। बेकरेक एवं बराज का कहना है की क द्वारा ख पर शक्ति का इस्तेमाल सिर्फ प्रत्यक्ष निर्णय प्रक्रिया (डाल) में ही नही होता, परंतु क इस प्रकार भी शक्ति का इस्तेमाल कर सकता है कि वह राजनीतिक प्रक्रिया का दयारा अपेक्षाकृत अहानिकारक मुद्दों तक सीमित कर दे। मार्क हगार्ड का कहना है कि इस बात का एक सीधा उदाहरण एजेंडा सेटिंग कि प्रक्रिया है , जहां वैसे मुद्दों को जो ख के लिए महत्वपूर्ण है , क द्वारा जानबूझ कर छोड़ दिया जाता है।

इसका मतलब है कि ख के पास प्रासंगिक संसाधन नहीं है , और इसके कारण क शक्ति का इस तरह इस्तेमाल करता है कि बहुत सारे मुद्दों को उठाने से रोक सके। बचराच एवं बराज द्वारा बताए गए शक्ति के इस चेहरे को गैर - निर्णय लेने की शक्ति भी कहते हैं। बचराच एवं बराज गैर-निर्णय को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि गैर -निर्णय वैसा निर्णय है जो कि निर्णय वाले के हितों एवं मूल्यों के खिलाफ है। यह अव्यक्त एवं प्रकट चुनौतियों को दबाने का कार्य करता है। गैर-निर्णय यह सुनिश्चित करता है कि शक्ति-संघर्ष के दायरे में क्या है , और क्या नहीं है? इस प्रकार निजी हितों को दायरे से बाहर रख कर निर्णयकर्ता अपने हितों कि रक्षा कर लेता है।

5 (ii) शक्ति पर लुकस के मत : लुकस शक्ति की एक साधारण परिभाषा प्रस्तुत करते हैं-क , ख के ऊपर शक्ति का इस्तेमाल करता है, जब क , ख को इस तरह प्रभावित करता, है जो कि ख के हित के विपरीत हो। लुकस बहुलवादियों एवं उनके आलोचकों द्वारा दिए गए शक्ति के विश्लेषण को जाँचते हैं। लुकस ने डाल (बहुलवादी) के शक्ति के सिद्धांत को शक्ति का एक-आयामी दृष्टिकोण कहते हैं। लुकास अब अपने सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए शक्ति के एक तीसरे आयाम की चर्चा करते हैं। लुकस इन तीनों आयामों के मुख्य विशेषताओं को उजागर करते हैं-

civilexamonline.com

शक्ति

शक्ति का एक आयामी दृष्टिकोण इन बातों पर फोकस करता है-

(a) गतिविधि

(b) निर्णय प्रक्रिया

(c) महत्वपूर्ण मुद्दे

(d) दृश्य संघर्ष

(e) राजनीतिक हिस्सेदारों के हित जिनकी नीति प्राथमिकताओं के रूप में पता चलती है।

शक्ति का दो आयामी दृष्टिकोण इन बातों पर फोकस करता है-

(a) निर्णय प्रक्रिया एवं राजनीतिक एजेंडा पर नियंत्रण

(b) मुद्दे एवं संभावित मुद्दे

(c) दृश्य (प्रकट एवं अप्रकट) संघर्ष : राजनीति हिस्सेदारी का हित जो नीति प्राथमिकताओं और शिकायतों के रूप मेन दिखते हैं।

civilexamonline.com

शक्ति का त्रियायामी दृष्टिकोण इन बातों पर बल देता है-

(a) निर्णय प्रक्रिया एवं राजनीतिक ऐजेंडा पर नियंत्रण

(b) मुद्दे एवं संभावित मुद्दे

(c) दृश्य (प्रकट एवं अप्रकट) तथा अव्यक्त संघर्ष

(d) व्यक्तिपरक एवं वास्तविक हित

लुकस के त्रिआयामी दृष्टिकोण के बारे मेन लोरेंजी नामक विद्वान का कहना है कि, शक्ति का तीसरा आयाम वह शक्ति है जो धारणा , अनुभूति एवं वरीयताओं को आकार प्रदान करके शिकायतों को बनने से रोकता है। इस कारण यह सुनिशिचित होता होता है कि मौजूद व्यवस्था में निश्चित भूमिकाओं को स्वीकृति कर लिया जाए।

शक्ति के तीसरे आयाम के दो मुख्य पहलू हैं। एक , शक्ति सम्बन्धों को संरचनात्मक रूप से गठित सामाजिक संबंध , आकार प्रदान करते हैं। दूसरे , शक्ति, ज्ञान को विकृत कर देती है। इसका अर्थ है कि शक्ति झूठी चेतना का निर्माण करती है। और ऐसे में लोगों के वास्तविक हित

उनसे छुपे रहते है, और वे अपना हित समझते हैं, वह वास्तव में शक्तिशाली का हित होता है। लुकस का तीसरा आयाम, मार्क्सवादी सामाजिक सम्बन्धों के काफी नजदीक दिखता है।

शक्ति का तीसरा आयाम यह दिखाता है कि समाज में अव्यक्त संघर्ष है। क के हित (शक्ति का उपयोग करने वाला) ख के सही हित (जो कि शामिल नहीं किए गए) के बीच अंतर्विरोध दिखाता है। ख के हित संबंधी मुद्दों को शक्ति संघर्ष के क्षेत्र से बाहर कर दिया जाता है। लुकस का कहना है कि शक्ति के आलोचनात्मक विमर्श को वैयक्तिक हितों तथा उन असली हितों को समाहित करना चाहिए जो कि राजनीतिक प्रक्रिया से बाहर है। सारांश में लुकस इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ रहे थे कि- व्यक्ति वैसे कार्य क्यों करते हैं जो उसके असली हितों के विपरीत है, और इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वे शक्ति के तीसरे आयाम की बात करते हैं, जो कि झूठी चेतना का निर्माण करता है। अपने हाल के कार्यों में लुकस ने शक्ति को वर्चस्व के रूप मे भी देखा है। यह वर्चस्व प्रकट एवं अप्रकट दोनों माध्यमों द्वारा होता है।

5 (iii) शक्ति का मार्क्सवादी सिद्धांत: मार्क्सवादी शक्ति को वर्ग के संदर्भ में देखते हैं। शक्ति हमेशा, वर्ग कि शक्ति होती है। उदाहरण के लिए पूंजीवादी व्यवस्था में शक्ति बुर्जुवा वर्ग के पास होता है। शक्ति का स्रोत उत्पादन के साधनों का स्वामित्व है। शक्ति उन लोगों के हाथों में केन्द्रित रहती है, जो उत्पादन के साधनों के स्वामी है। दूसरे वर्ग के पास शक्ति नहीं होती और वे शोषण का शिकार होते हैं। मार्क्स का कहना था कि मानव इतिहास में समाज दो वर्गों में विभक्त रहा है। मालिक और गुलाम , लार्ड एवं सर्फ , बुर्जुवा और सर्वहारा वर्ग। एक वर्ग साधनों का स्वामी होता है , और दूसरा अपनी श्रम-शक्ति को बेचता है। आधुनिक पूंजीवाद व्यवस्था में 'सरप्लस वैल्यू' का यह समायोजन एक गैर आक्रामक तरीके से होता है। इस प्रकार से एक वर्ग के द्वारा दूसरे वर्ग का शोषण होता है।

civilexamonline.com

शक्ति

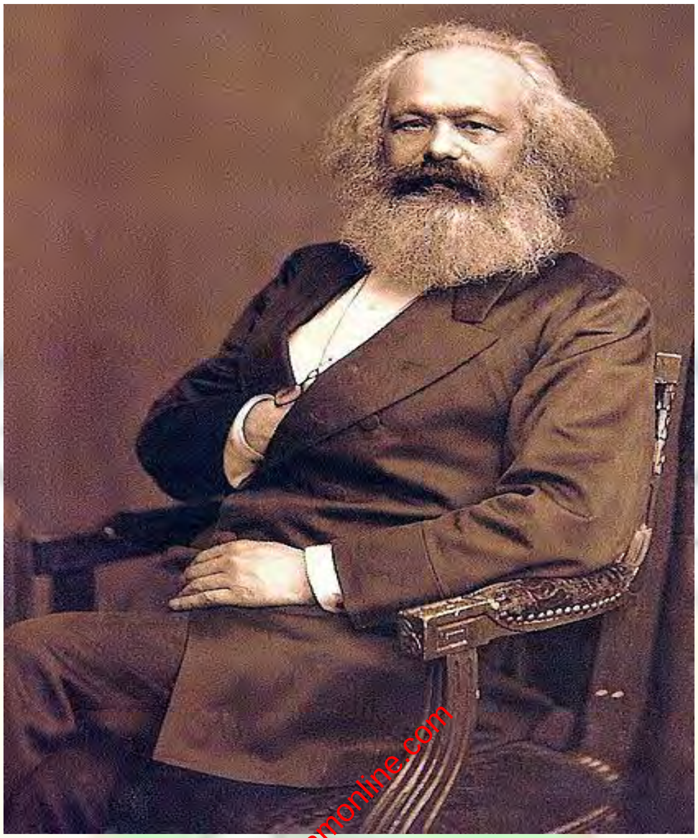

(Picture of Karl Marx: Source: http://en.wikipedia.org/wiki/File:Karl_Marx_001.jpg)

civilexamonline.com

मार्क्स के अनुसार अर्थव्यवस्था आधार में रहता है और राजनीतिक , कानूनी ढांचे , नैतिकता इत्यादि अधिरचना का हिस्सा है। जो वर्ग उत्पादन के साधनों (अर्थव्यवस्था) को नियंत्रण में रखता है; वह अपने हितों की रक्षा के लिए अधिरचनाओं के अन्य हिस्सों का उपयोग करता है। मार्क्स का कहना है कि इस वर्चस्व एवं शोषण को सिर्फ क्रांति द्वारा समाप्त किया जा सकता है। मार्क्स का ऐसा मानना था की यूरोप की पूंजीवादी शासन व्यवस्था क्रांति के लिए परिपक्व हैं।

वर्चस्व, उस नैतिक एवं बौद्धिक नेतृत्व को कहते हैं , जिसमे अधीनस्थ वर्ग द्वारा शासक वर्ग के प्रभुत्व को सहमति प्राप्त होती है।

परंतु पश्चिम के विकसित पूंजीवादी समाज में क्रांति नहीं हुई और क्रांति रूस जैसे ग्रामीण एवं पिछड़े समाज में हुई। इसके कारण पूंजीवादी समाज के बारे में मार्क्सवादी विचारकों

ने पुनर्विचार शुरू किया। किस प्रकार से राजनीतिक शक्ति , पूंजीवादी समाज में स्थापित एवं स्थिर है? अंतोनियों ग्रामशी नाम के इतालवी मार्क्सवादी ने वर्चस्व (Hegemony) के सिद्धांत के साथ इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया । ग्रामशी ने राजनीतिक संरचना को आर्थिक आधार से सापेक्षतर स्वायत्त माना। ग्रामशी का कहना है की राज्य अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए बल एवं सहमति दोनों प्रकार के शक्ति का उपयोग करता है। बल-शक्ति का उपयोग बहुत कम होता है। आधुनिक राज्यों में राज्य जनता में सहमति पैदा कर अपनी शक्ति को वैध बना लेता है। सहमति पैदा करने का कार्य , सांस्कृतिक, वैचारिक एवं शैक्षणिक माध्यमों द्वारा किया जाता है। वर्चस्व का अर्थ है, सत्य एवं वास्तविकता के बारे में शासक वर्ग के दृष्टिकोण को अन्य वर्गों द्वारा सामान्य ज्ञान के रूप में स्वीकार कर लेना। आमतौर पर ग्रामशी के वर्चस्व के विचार का उपयोग शासक वर्ग के सांस्कृतिक नेतृत्व को समझने के लिए किया जाता है।

शासक वर्ग के इस नैतिक एवं बौद्धिक नेतृत्व के कारण अधीनस्थ वर्ग, शासक वर्ग के प्रभुत्व होने को अपनी सहमति दे देते हैं। वर्चस्व बहुत गहराई से कार्य करता है। यहाँ तक की जो शब्द हम बोलते एवं लिखते हैं , वह भी सामाजिक सम्बन्धों एवं शासक वर्ग की विचारधारा द्वारा ऐतिहासिक स्तर पर निर्मित होता है। मार्क्स से अलग , ग्रामसी का कहना है की शासक वर्ग एक नही है, और भिन्न वर्गों का एक शाषित समूह है। इसिलिए वर्चस्व कभी भी स्थिर नहीं है, और प्रतिरोध जारी रहता है।

civilexamonline.com

एंटोनियो ग्रामशी (1891-1937) एक इटालियन मार्क्सवादी राजनीतिक सिद्धांतकार थे। उन्हें बेनिटो मुसोलिनी की सरकार द्वारा, उसके खिलाफ आवाज उठाने के कारण जेल में डाल दिया गया था। वर्चस्व का सिद्धांत ग्रामशी का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है। ग्रामशी का प्रभाव मार्क्सवादी विचारधारा पर बहुत गहरा और विस्तृत है।

Source: http://en.wikipedia.org/wiki/File:Gramsci.png

civilexamonline.com

5 (iv) फूको : फूको शक्ति का कोई सुसंगत एवं सुव्यवस्थित सिद्धांत नही प्रस्तुत करते। एक तरह से शक्ति का विचार उनके सभी प्रकार के लेखनों में स्याही की तरह है। इसिलिए शक्ति पर उनके विचार जानने के लिए, उनके भिन्न-भिन्न लेखों को देखना होगा। ऐसा माना जाता है कि फूको को समझना कठिन है , परंतु फूको को उनके शब्दों में समझना ज्यादा आसान है , तथा फूको को समझते समय उनमे संरचना ढूँढना निरर्थक है। शक्ति के उपयोग के बारे में चर्चा करते हुए फूको ने कहा कि आधुनिक समय में इसका उपयोग पुराने समय से भिन्न है। आज शक्ति दमनकारी नहीं बल्कि उत्पादक है।

फूको मृत्यु पर अधिकार का तथा अधिकार एवं जीवन के ऊपर शक्ति के बीच अंतर करते हैं। उनका मानना है कि शक्ति के बारे में पारंपरिक सोच , शक्ति को सिर्फ एक तरह से देखती है- मृत्यु पर अधिकार । यह जीवन लेने कि न्यायिक शक्ति है। पर फूको का कहना है कि शक्ति सिर्फ उसी तरह से काम नहीं करती परंतु अन्य तरीकों से भी काम करती है। और इसी दूसरे

शक्ति

तरीके को बताने के लिए फूको ने जीवन के ऊपर अधिकार कि अवधारणा का विकास किया। सबसे पहले हम मृत्यु पर अधिकार को समझते हैं। यह शक्ति   , जीवन लेने का अधिकार या जीवन जीने या जीवन देने का अधिकार है। इस प्रकार के शक्ति का विचार यूरोपीय ज्ञानोदय विचारकों कि उपज है। न्यायिक शक्ति कि विवेचना करते हुए फूको कहते हैं-   इस प्रकार कि शक्ति का प्रयोग मुख्य रूप से कटाव एवं घटौती के यंत्र के रूप में होता है। इस शक्ति के कारण धन, संपत्ति आदि पर टैक्स लगता है। इसके अधिकार का सबसे बड़ा उदाहरण जीवन ले लेने का अधिकार है। न्यायिक शक्ति मूल रूप से निषेध एवं सजा के बारे में है।

न्यायिक शक्ति मात्रात्मक एवं स्पर्शय है। इसिलिए अगर मेरी शक्ति का निषेध होता है, तो मेरी शक्ति घटती है और किसी और कि शक्ति बढ़ती है। इसिलिए इसे शक्ति का जीरो-सम (शून्य-राशि) खेल के रूप में भी देख सकते है। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति किसी नियम का उलंघन करता है तो उसकी कुछ स्वतंत्रताओं को उससे छिन लिया जाता है। न्यायिक शक्ति भिन्न सरकारी संस्थाओं द्वारा (कानून, पुलिस, नौकरशाही) प्रयुक्त की जाती है।

civilexamonline.com

मृत्यु के अधिकार के इस न्यायिक शक्ति के विपरीत फूको शक्ति का एक नया विचार प्रस्तुत करते हैं। जीवन के ऊपर अधिकार के अंतर्गत दो प्रकार कि शक्तियाँ आती हैं- अनुशासनात्मक शक्ति एवं जैव-राजनीतिक शक्ति (बायो -पॉलिटिकल पावर)।

शक्ति

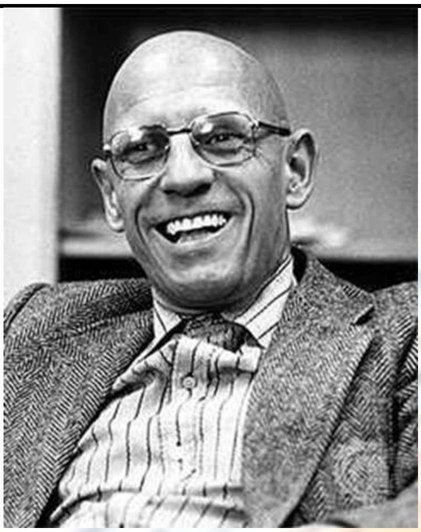

मिसेल फूको (1926-1984) एक फ्रांसीसी दार्शनिक , इतिहासकार, सामाजिक विचारक एवं साहित्यिक आलिचाक थे। वे बीसवीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली दार्शनिक में से एक थे । उनके सिद्धान्तों में शक्ति एवं ज्ञान के रिश्ते का अध्ययन होता है। शक्ति के उपयोग के बारे में चर्चा करते हुए फूको ने कहा कि आधुनिक समय में इसका उपयोग पुराने समय से भिन्न है। आज शक्ति दमनकारी नहीं, बल्कि उत्पादक है। वह इस बात पर भी ध्यान केन्द्रित करते हैं कि कैसे सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक नियंत्रण होता है। फूको कि मुख्य रचनाएँ हैं- “अनुशासन एवं दण्ड”, “कारागार का जन्म ”, पागलपन एवं सभ्यता तर्कसंगत युग में पागलपन का इतिहास ”, “कामुकता का इतिहास”।

Source : http://en.wikipedia.org/wiki/File:Foucault5.jpg

civilexamonline.com

जीवन के ऊपर शक्ति के बारे में फूको का कहना है कि यह निरंतर नियामक एवं सुधारात्मक यंत्र है। इस प्रकार कि शक्ति परिमाणित , मूल्यांकित एवं पदानुक्रमित करती है। इस प्रकार कि शक्ति न्यायिक शक्ति कि तरह जानलेवा नहीं है। यह शक्ति ऐसी कोई रेखा नही खींचती जो आज्ञाकारी प्रजा एवं विरोधी प्रजा को अलग करे। यह समाज को कुछ कायदों में बांधकर रखती है जो शक्ति कि प्रध्यौगिकी का एतिहासिक परिणाम है। यह शक्ति उत्पादक है न कि घटोतरी करने वाला । यह शक्ति समर्थकारी है। इस शक्ति का जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नियंत्रण एवं विनियमन के तरीकों के माध्यम से , यह शक्ति जीवन को उपयुक्त बनाना चाहती है और बढ़ाना चाहती है। यह जीवन को अधिक कर्म - कुशल एवं सक्षम बनाना चाहती है।

इसलिए दूसरे शब्दों में जीवन के ऊपर शक्ति, जीवन को सूक्ष्मतर स्तर तक प्रबंधित कर के बेहतर बनाना चाहती है। चूंकि यहाँ शक्ति उत्पादक एवं समर्थकारी है। इसलिए इससे पीछा छुड़ाने का प्रश्न ही नहीं उठता। जीवन के ऊपर शक्ति , जीवन में हर जगह और हर

चीज में स्थित है। यह शक्ति , अनौपचारिक संस्थाओं, जैसे सामाजिक मानदंडों में स्थित है। यह शक्ति , व्यक्ति द्वारा नहीं लागू की जाती बल्कि समाज द्वारा सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रोत्साहनों एवं विकल्पों के माधायम से लागू कि जाती है। यह नियमों और औपचारिक क़ानूनों द्वारा लागू नहीं कि जाती बल्कि यह सामाजिक राय एवं मानदंडों द्वारा लागू की जाती है।

जीवन के ऊपर शक्ति दो प्रकार से प्रयोग में आती है- अनुशासनात्मक शक्ति एवं जैव-राजनीतिक शक्ति। अनुशासनात्मक शक्ति व्यक्ति के शरीर का मानकीकरण है। फूको का कहना है कि अनुशासन शरीर पर केन्द्रित होता है। एक तरफ तो यह शरीर को ज्यादा क्षमतावान बनाना चाहता है तो दूसरी तरफ यह शरीर को ज्यादा वश में रखने योग्य भी बनाता है।

इस प्रकार अनुशासन के द्वारा व्यक्ति के शरीर को प्रबंधित किया जाता है , एवं रास्ते पर लाया जाता है। अनुशासन का लक्ष्य शरीर कि क्षमताओं और दक्षताओं को बढ़ाना है। फूको ने अपनी पुस्तक "अनुशासन एवं सज़ा" (डिसिप्लिन एंड पनिश) में दण्ड प्रणाली का विश्लेषण करके यह देखने का प्रयास किया है कि अनुशासनातमाक शक्ति किस प्रकार से कार्य करती है। इस पुस्तक में वह जेल प्रणाली में आए बदलावों कि व्याख्या करते हैं। फूको कहते हैं कि 18वीं शताब्दी से पहले सज़ा औपचारिक, प्रदर्शित करने के लिए और व्यक्ति के शरीर पर केन्द्रित था। उदाहरण के लिए सार्वजनिक रुप से फांसी देने के दो लक्ष्य हैं- एक राजा के अधिकार का प्रदर्शन करना एवं दूसरे जनता को दिखाना कि , आज्ञा का उलंघन करने वालों के साथ, क्या-क्या किया जा सकता है।

civilexamonline.com

फूको के अनुसार 18वीं शताब्दी से जेल प्रणाली में बदलाव आने लगा। करीबी रूप से निगरानी का यंत्र आ गया , तथा बल का नंगा नृत्य कम होने लगा। परंतु यह सब किसी सज़ा को मानवीय बनाने के लिए नहीं हो रहा था। वरण यह तो शक्ति का सबसे सही अर्थशास्त्र था। फूको के अनुसार अनुशासन , तकनीकों कि एक श्रृंखला है जो शरीर के संचालन को नियंत्रित करता है। अनुशासन व्यक्ति कि गतिविधियां एवं अनुभवों को व्यवस्थित एवं बाध्य से उत्पन्न होता है। यह कार्य समय-सारणी, सैन्य-अभ्यास आदि तरीकों

द्वारा किया जाता है। अनुशासनिक शक्ति मुख्य रूप से तीन उपकरणों के माध्यमों से कार्य करती है-

श्रेणीबद्ध प्रेक्षण (Hierarchical observation) सामान्यीकरण (normalization) और परीक्षण (examination). अवलोकन एवं दृष्टि, शक्ति के मुख्य उपकरण हैं। अवलोकन एवं दृष्टि का एक उदाहरण आधुनिक जेल व्यवस्था है। जेल व्यवस्था पर बेन्थम के पेनोप्तिकन का प्रभाव दीखता है। ऐसी संरचना में सभी ओर से घेराव के बीच में एक देखने वाला टावर होता है। इस टावर से प्रहरी अपने सभी ओर देख सकता है। अब सभी कैदी को यह लगता है की प्रहरी उसे देख रहा है , चाहे प्रहरी कहीं भी देख रहा हो। इस कारण से सभी कैदी इस तरह से आचरण कराते हैं की उन पर नज़र रखी जा रही है। कैदी निगरानी को आत्मसात कर लेते हैं। जीवन के ऊपर शक्ति के दूसरे प्रकर को फूको जैव-राजनीतिक शक्ति (Bio-logical power) कहते हैं। फूको के अनुसार शक्ति की यह प्रौद्योगिकी अठारहवीं शताब्दी में जनसंख्या को प्रबंधित करने के लिए आया । इस शक्ति का कार्य जनसंख्या के जीवन , मरण, बीमारी, एवं प्रजनन इत्यादि को प्रबंधित करना है। इस प्रकार की शाक्ति का उपयोग आधुनिक राष्ट्र- राज्य, सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से करता है। इस प्रकार जैव शक्ति, जनसंख्या का मानकीकरण है। फूको के शब्दों में जैव-शक्ति जीवन को प्रबंधित करने की शक्ति है।

civilservamonline.com

राष्ट्र राज्य अपने देश की जनसंख्या के बारे में भिन्न प्रकार के तथ्य इकट्ठा करते हैं। जैसे जन्म दर, मृत्यु दर, और फिर वे यह प्रयास करते हैं की सारे लोग इसी औसत के आस पास हों। फूको के शक्ति के विचार में प्रतिरोध बहुत ही कठिन प्रतीत होता है। पुराने प्रकार की न्यायिक शक्ति का प्रतिरोध सीधे-सीधे हो सकता था। परंतु जीवन के ऊपर शक्ति तो जीवन को ज्यादा उत्पादन बनाने के लिए है। यह तो सर्वत्र विद्यमान है , फिर इसका प्रतिरोध कैसे संभव होगा। फूको का कहना है की ऐसी शक्ति अपना प्रतिरोध भी खुद उत्पादन करती है और उसे नियंत्रित भी करती है। तो फिर ऐसी परिस्थिति में जनता क्या करे? फूको ने ऐसे में 'क्रिटिक' (आलोचना) का विचार दिया है।

फूको के अनुसार इस प्रकार के शक्ति के प्रतिरोध में नए प्रकार की पहचान बनाना आवश्यक है जो कि संस्कार के द्वारा बनाए गयी पहचान को अस्वीकार करने से आता है।

5 (v) शक्ति का नारीवादी विचार: नारीवाद, महिलाओं की अधीनता का विश्लेषण करता है एवं इस अधीनता को समाप्त करने के लिए सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक स्तर पर कार्य करता है। नारीवाद का लक्ष्य सभी महिलाओं , चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, रंग, क्षेत्र की हो को आज़ाद करने का है। नारीवाद के व्यवहार को विश्व के भिन्न हिस्सों में हो रहे आंदोलनों में देखा जा सकता है। सैद्धांतिक स्तर पर नारीवाद बहुत ही गतिशील है। नारीवाद के अंतर्गत भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार पाए जाते हैं। परंतु सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद सारे नारीवादी लेखक इस बात पर सहमत हैं कि महिलाओं का शोषण होता है, एवं उनकी स्थिति में सुधार की आवश्यकता है । हमलोग नारीवाद के विकास में तीन लहरों को देख सकते हैं- उदार एवं समाजवादी नारीवाद की पहली लहर (18वीं सदी से 1920 के दशक), कट्टरपंथी नारीवाद की दूसरी लहर (1960-1980) और उत्तर आधुनिकतावादी नारीवाद की तीसरी लहर (1980 के बाद)। हाल के वर्षों में नए-नए प्रकार के नारीवादी विचारकों का उदय हुआ- रंगभेद विरोधी नारीवाद, तीसरी दुनिया नारीवाद एवं पर्यावरण नारीवाद ।

civilexamonline.com

नारीवाद वह विचारधारा एवं सामाजिक आंदोलन है जो समाज में महिलाओं के साथ न्याय से संबन्धित प्रश्नों पर विचार करता है। यह महिलाओं के ऊपर हो रहे अत्याचार का विश्लेषण करके उसके कारणों को ढूँढने का प्रयास करता है। नारीवादी विचारक महिला के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए भिन्न- भिन्न प्रकार के सिध्धांत देते हैं।

आमतौर पर नारीवादी विचारकों ने शक्ति के सिद्धांत के बारे में स्पष्ट रूप से चर्चा नहीं की है। परंतु शक्ति नारीवाद के विचार का केंद्रीय विषय है। नारीवादी इसी बात पर विचार करते हैं की किस प्रकार से शक्ति पुरुषों के पास केन्द्रित है और महिलाएं शक्तिहीन हैं। नारीवादी समाज में शक्ति के पुनर्वितरण की बात करते हैं। स्टेनफर्ड दर्शन विश्वकोश के अनुसार नारीवादियों द्वारा किए गए शक्ति के विश्लेषण को तीन प्रकार में विभाजित कर सकते हैं- शक्ति संसाधन के रूप में, शक्ति वर्चस्व के रूप में, शक्ति समर्थ बनाने के रूप में।

शक्ति

(i) शक्ति संसाधन के रूप में: आमतौर पर उदारवादी नारीवादी विचारक उदारवाद के विचारधारा से प्रभावित हैं। इनके अनुसार शक्ति साकार एवं मात्रात्मक है। इसिलिए कोई व्यक्ति शक्ति को अपने पास रख सकता है , और शक्ति की मात्रा एवं गुणवत्ता में भिन्नता हो सकती है। इस प्रकार के मत का मानना है की महिलाओं के शक्तिहीन होने का यह कारण है की , सामाजिक, राजनीतिक एवं कानूनी क्षेत्रों में , शक्ति का वितरण न्यायपूर्ण नहीं है। अगर महिलाओं के पास कम शक्ति होगी तो वे समाज में महत्वपूर्ण सामाजिक उद्देश्यों को हासिल नहीं कर पाएँगी। सूजन ओकिन नाम के नारीवादी का कहना है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों एवं महिलाओं के बीच कृत्रिम असमानताएँ निर्मित की जाती हैं। कानूनी , आर्थिक एवं राजनैतिक सुधारों द्वारा समाज में शक्ति के संसाधन का फिर से न्यायपूर्ण बंटवारा किया जाना चाहिए । इस मत को मानने वाले कुछ महत्वपूर्ण विचारक हैं- मैरी उल्स्टेन क्राफ्ट , जे.एस.मिल, हैरिएट टुबमन,एलेनर रुसवेल्ट, ब्रेती फ्रीडन, रेबेका वाल्टर, नाओमी उल्फ और मारथा नुसबम।

(ii) शक्ति वर्चस्व के रूप में:-

civilexamonline.com

एक व्यक्ति या समूह के पास वर्चस्व होता है जब वह कुछ आदेश दे और आज्ञा का पालन हमेशा हो जाए। बहुत सारे नारीवादी विचारक शक्ति को संसाधन के रूप में न देखकर संबंध के रूप में देखते हैं। कट्टरवादी नारीवादी इस संबंध को बोलने के लिए पितृसत्ता की अवधारणा का प्रयोग करते हैं। 'पितृसत्ता', नारीवादियों के विचार को समझने की कुन्जी के समान है। पितृसत्ता का शाब्दिक अर्थ होता है-पिता का शासन। ऐतिहासिक रूप से पुरुषों का यह वर्चस्व समाज के प्रत्येक क्षेत्र में दीखता है। नारीवादी विदुषी सिलविया वाल्वई के अनुसार पितृसत्ता सामाजिक संरचना एवं व्यवहार की वह व्यवस्था है, जिसमे पुरुष महिलाओं का शोषण करते हैं, दबाते हैं एवं उन पर वर्चस्व कायम रखते हैं। जुलीयट मिचेल नाम के नारीवादी विदुषी का कहना है की पितृसत्ता वह विचारधारात्मक तथ्य है जो पुरुषत्व एवं नारीत्व का सांस्कृतिक तरीके से निर्माण करता है। इस प्रकार से पितृसत्ता संरचना के मुख्य लक्षण हैं-

(a) यह एक पुरुष वर्चस्व वाली संरचना है, जिसमें समाज के भिन्न क्षेत्रों में शक्ति संबंधी भूमिका पुरुषों के द्वारा निभाई जाती है। और महिलाएं शक्ति प्राप्त करने में असमर्थ होती हैं।

(b) पुरुष महिलाओं की रक्षा करते हैं तथा उन पर नियंत्रण रखते हैं।

(c) महिलाओं और पुरुषों को कुछ खास गुणों से जोड़ दिया जाता हैं।

(d) समाज में पुरुष संबंधी गुण , महिला संबंधी गुणों से ज्यादा महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान माने जाते हैं।

(e) समाज मे पुरुषों की केंद्रीय भूमिका को प्राकृतिक माना जाता है।

पितृसत्ता का शाब्दिक अर्थ पिता का शासन है। नारीवादी विद्वानों द्वारा इस शब्द का उपयोग एक सिध्धांत के रूप में होता है। यह सिध्धांत नारी एवं पुरुष के बीच विद्यमान शक्ति संबंध को दर्शाता है। यह सिधान्त कहता है की पितृसत्ता वह सामाजिक व्यवस्था है जिसमे पुरुष शक्ति का प्रयोग करता है एवं महिला शक्तिहीन होती है। पुरुष का शक्ति का प्रयोग जब सीधे तौर पर होता है तो वह महिलाओं के विरुध्ध हिंसा के रूप में दीखता है।

civilexamonline.com

मूल रूप से पितृसत्ता, महिलाओं एवं पुरुषों के बीच शक्ति-संबंध को दर्शाता है। यह शक्ति-संबंध पदसोपानीय और वर्चस्व पर आधारित है। पुरुष अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए महिलाओं के प्रजनन , यौन और उनके शरीर पर नियंत्रण रखते हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के माध्यम से स्त्री एवं पुरुष की निश्चित भूमिकाओं को न्यायपूर्ण एवं सही बताया जाता है। हालांकि पितृसत्ता एकल संरूप संरचना के रूप में नहीं है , बल्कि यह इतिहास , भूगोल तथा संस्कृति के साथ बदलता रहता है। पितृसत्ता की उत्पत्ति एवं चलन के बारे में विवाद है। सामाजिक जीव विज्ञानी (जैसे स्टीवन गोल्डबर्ग) कहते हैं की पितृसत्ता की उत्पत्ति के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण कारक लिंगों की आनुवांशिक (genetic) बनावट है। गोल्डबर्ग का कहना है की पुरुषों का वर्चस्व सावभौमिक है , इसिलिए यह मनुष्य की जीव वैज्ञानिक बनावट से संबंधी हैं। परंतु इस प्रकार के मत को ज़्यादातर सामाजिक एवं राजनैतिक विचारक नकारते हैं। ये विचारक पितृसत्ता के सामाजिक रचनावाद का सिधान्त देते है । कैरोल पेटमन नाम के विद्वान का मत है की पुरुषत्व एवं नारीत्व के बीच की यह पितृसत्तात्मक रचना स्वतन्त्रता एवं अधीनता के बीच के राजनीतिक फर्क के समान

है। इसिलिए पितृसत्तात्मक व्यवस्था की जड़ें इस बात से जुड़ी हुई हैं की किस तरह से समाज में प्रत्येक लिंग के लिए निश्चित एवं उचित भूमिका तथा कार्य चिन्हित किए जाते हैं। गेरदा लरणर नाम के विद्वान का भी कहना है की पितृसत्ता एक सांस्कृतिक मानक है।

(iv) शक्ति सबलीकरण के रूप में: शक्ति के बारे में ज़्यादातर नारीवादी विचार क शक्ति की अवधारणा को वर्चस्व (किसी के ऊपर शक्ति) और नियंत्रण के रूप में देखते है। शक्ति के बारे में ऐसी संकल्पना ही पुरुषवादी मानसिकता की उपज है। इसिलिए भिन्न-भिन्न सैद्धांतिक धाराओं के नारीवादी विचारकों ने शक्ति के बारे में पुनर्कल्पना की बात की है। इस प्रकार के विचार रखने वाले प्रमुख नारीवादी हैं-जीन बेकर मिलर, विरजीनिया हेल्ड, साराह लूसिया हुगलैंड, लूस इरीगरी, नैन्सी हार्टस्टोक एवं हेलेन सियाम्स ।

इन विचारकों का कहना है की शक्ति की परंपरागत अवधारणा, दूसरे की शक्ति को घटाने की बात करती है। परंतु महिलाएं अपनी शक्ति को बढ़ाना एवं दूसरे की शक्ति को घटाने में विश्वास नही रखती। माताओं एवं देखभाल करने वाले के रूप में अपने अनुभवों के कारण महिलाएं शक्ति को फिर से परिभाषित कर सकती हैं। यहाँ पर अपने आप को तथा दूसरे को बदलने एवं शसक्त बानने की क्षमता महत्वपूर्ण है। शक्ति को सशक्तिकरण के संदर्भ में देखा जाना चाहिए । हुगलैंड शक्ति को अंदर की शक्ति के रूप में देखती हैं। यहाँ पर वे शक्ति को पदसोपानीय एवं नियंत्रित करने वाला न देखकर इसे रचनात्मक, सकारात्मक एवं परिवर्तनकारी देखते हैं।

civilexamonline.com

5(vi) शक्ति के बारे मे हाना आरेंट का मत: अपनी पुस्तक 'आन वायलेन्स' मे हाना आरेंट कहती है की, शक्ति सिर्फ मानव के कार्य करने की क्षमता नही है, बल्कि यह समूह में सामंजस्य के साथ कार्य करने की क्षमता है। शक्ति कभी भी किसी व्यक्ति की संपति नहीं है। यह हमेशा एक समूह के संदर्भ में होता है और शक्ति तभी तक होती है जब तक समूह साथ में रहता है। हाना शक्ति शब्द के उपयोग को लेकर बहुत ही विशिष्ट थी। वह शक्ति शब्द को हिंसा , प्राधिकार आदि शब्दों के साथ अदल-बदल करने के पक्ष में नहीं थी।

शक्ति

उनका मानना था की जब हिंसा एवं शक्ति को एक जैसा उपयोग किया जाने लगता है तो लंबे समय तक ऐसे उपयोग के बाद दोनों प्रकार के तथ्यों के बीच भी अंतर नहीं रह जा ता। इसलिए आरेंट शक्ति को अन्य शब्दों से अलग पारिभाषित करती हैं। शक्ति किसी व्यक्ति की संपत्ति नहीं है, वरण यह उन लोगों के बीच होती है, जो एक आम रास्ते पर चलने के लिए सहमत होते हैं। इसलिए शक्ति किसी समूह की संपति भी नहीं है, बल्कि यह समूह के अंदर के संबंध में है।

चूंकि शक्ति समूह के लोगों के अस्थायी एवं अविश्वसनीय समझौते पर निर्भर है, इसलिए शक्ति ऐसी कोई स्थिर वस्तु नहीं जिसे अपने पास रखा जा सके। एक ओर शक्ति जो समूह में होती है , दूसरी ओर ताकत व्यक्ति में होती है। बल शब्द का उपयोग भी शक्ति की जगह नहीं किया जाना चाहिए। बल का प्रयोग प्राकृतिक एवं सामाजिक घटनाओं के लिए होता है जिन पर मनुष्य का कोई नियंत्रण नहीं है।

civilexamonline.com

हाना आरेंट (1906-1975) एक जर्मन-अमेरिकी विचारक एवं राजनीतिक सिद्धांतकार थी। उनके कार्यों में मुख्य रूप से स्वतन्त्रता , अधिकनायकवा द, लोकतन्त्र आदि अवधारणाओं पर विचार किया गया है। उनके कुछ प्रमुख कार्य हैं- “अधिनायकवाद की उत्पत्ति”, “मानव की हालत”, “क्रांति”। (source : http://en.wikipedia.org/wiki/File:Hannah_Arendt.jpg).

आरेंट के अनुसार शक्ति एवं हिंसा , एक दूसरे के विपरीत हैं। शक्ति सिर्फ वहीं होती है जहां हिंसा की आवश्यकता नहीं है। सरकार शक्ति पर आधारित होती है , न की हिंसा पर । शक्ति में सारे लोग अपनी स्वेक्षा से किसी कार्य के लिए सहमत होते हैं। हिंसा कभी भी शक्ति का निर्माण नहीं कर सकता। जब हिंसा और वर्चस्व

उत्पनन हो रह होता है तो शक्ति समाप्त हो रही होती है। आरेंट की शक्ति की संकल्पना गैर-पदसोपानीय एवं गैर- साधक है।

6. उपसंहार

आधुनिक सामाजिक एवं राजनीतिक संबंध को समझने में शक्ति की अवधारणा महत्वपूर्ण है। शक्ति की अवधारणा हमेशा ही अन्य अवधारणाओं जैसे - आधिपत्य, हिंसा, प्राधिकार, से मिली-जुली रहती है। इसलिए शक्ति के अध्ययन के अंतर्गत इन अवधारनाओं को ध्यान में रखा गया। शक्ति कि अवधारणा के अध्ययन के विकास को तीन चरणों में समझ सकते है। राबर्ट डाल का अध्ययन शक्ति को निर्णय प्रक्रिया के रूप में देखता है। बराज और बैकरेक का अध्ययन शक्ति को कार्यसूची निर्धारण के सन्दर्भ में देखता है। लुकस का अध्ययन शक्ति को विचार के नियंत्रण के सन्दर्भ में देखता है। शक्ति का संबंध समाज एवं राजनीति में भिन्न प्रकार के प्रश्न उतपन्न करता है। क्या शक्ति के सभी रूप उचित हैं ? क्या शक्ति से बचा जा सकता है ? और शक्ति का प्रतिरोध कैसे किया जाए। शक्ति के प्रयोग की नैतिक विवेचना भी महत्वपूर्ण है। आमतौर पर शक्ति समाज के कुछ लोगों के हाथ में केन्द्रित होती है तथा अन्य लोगों के ऊपर होती है। परंतु शक्ति की ऐसी पुरातन समझ को कुछ विद्वानों ने चुनौती भी दी है। आज के राजनीतिक संदर्भ में शक्ति के विचार के अंतर्गत प्रतिरोध की बातचीत महत्वपूर्ण होती जा रही है। साथ ही साथ नारीवाद जैसे विचारधाराओं ने शक्ति कि प्रचलित समझ पर प्रस्न चिन्ह भी लगाये हैं। यह कहना अनुचित नही होगा कि राजनीती को समझने के लिए शक्ति कि अवधारणा सदा ही महत्वपूर्ण रहेगी। परन्तु इसके बारे में मतभेद भी हमेसा विद्यमान रहेंगे।

civilexamonline.com

शक्ति

civilexamonline.com

प्रश्न-

(i) शक्ति की अवधारणा वाद-विवाद से भरी हुई है। इस कथन के प्रकाश में शक्ति की अवधारणा के अध्ययन में आने वाली समस्याओं का वर्णन करें।

(ii) शक्ति को परिभाषित करें। सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भ में शक्ति के प्रकृति का विश्लेषण करें।

(iii) शक्ति एवं प्राधिकार के बीच अंतर स्पष्ट करें। मैक्स वेबर द्वारा दिए गए प्राधिकार की अवधारण का वर्णन करें।

(iv) फूको द्वारा दिए गए शक्ति के सिद्धांत की विवेचना करें।

(v) हाना द्वारा दिए गए शक्ति के सिद्धांत को समझाएँ।

(vi) डाल से लेकर लुकस तक शक्ति के सिधान्त के विकास का अवलोकन करें।

(vii) नारीवादियों द्वारा दिए गए शक्ति के सिद्धांत की व्याख्या करें।

(viii) शक्ति की अवधारणा पर भिन्न-भिन्न सिद्धांतों के बीच के विवाद को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

civilexamonline.com

संदर्भ सूची-

Banes, Barry (1993), Power, in: Richard Bellamy (ed.), *Theories and concepts of Politics: An Introduction*, Manchester/New York: Manchester University Press, 197-219.

Dahl, Robert (1957), *The Concept of Power*, Behavioural Science, 2:3 July, http://onlinelibrary.wiley.com/doi/10.1002/bs.3830020303/pdf.

Foucault, M.(1977), *Discipline and Punish*: *The Birth of the Prison*. New York: Pantheon.

Foucault, M. (1986), *The Foucault Reader*, P. Rabinow (ed.).Harmondsworth: Penguin.

Haugard, Mark (2002), *Power: A Reader*, Manchester University Press.

Lukes, Steven(2004), *Power: A Radical View*, Palgrave Macmillan.

Stanford Encyclopaedia of Philosophy, http://plato.stanford.edu/entries/feminist-power/.

Menon, Nivedita (2008), Power, in Bhargava and Acharya (eds.) *Political Theory: An Introduction*, Delhi, Pearson Education India.

civilexamonline.com